मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

BSKS–191

बी. ए. (सामान्य) संस्कृत

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

बी.एस.के.एस.-191 : भारतीय वास्तुकला प्रणाली

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) इस प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं।*

(ii) तीनों खण्ड अनिवार्य हैं।

खण्ड—क

1. अधोलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : $3 \times 15 = 45$

(i) चैत्ये भयं ग्रहकृतं वल्मीकश्वभ्रसङ्कुले विपदः।
गर्तायान्तु पिपासा कूर्माकारे धनविनाशः॥

अथवा

अश्वत्थश्च कदम्बश्च कदली बीजपूरकः।
गृहे यस्य प्ररोहन्ति स गृही न प्ररोहति॥

(ii) नन्द्यावर्तमलिन्दैः शालाकुड्यात् प्रदक्षिणान्तगतैः।

द्वारं पश्चिममस्मिन् विहाय शेषाणि कार्याणि॥

अथवा

वासगृहाणि च विन्द्याद्विप्रादीनामुदग्दिगाद्यानि।

विशतां यथा भवनं भवन्ति तान्येव दक्षिणतः॥

(iii) भूर्वेदपञ्चकं त्रिस्त्रिः प्रवेशे कलशेऽर्कभात्।

मृतिर्गतिर्धनं श्रीः स्याद्वैरं शुक् स्थिरता सुखम्।

अथवा

पूर्वस्यां श्रीगृहं प्रोक्तमाग्नेय्यां स्यान्महानसम्।

शयनं दक्षिणायान्तु नैर्ऋत्यां शस्त्रमन्दिरम्॥

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

$3 \times 10 = 30$

(i) भूमि-परीक्षण की विधियों का वर्णन कीजिए।

(ii) 'वास्तुसौख्यम्' ग्रन्थ के रचनाकार टोडरमल के विषय में विस्तृत वर्णन कीजिए।

(iii) शाला एवं अलिन्द के प्रमाण का उल्लेख कीजिए।

(iv) शङ्कुस्थापनविमर्श पर प्रकाश डालिए।

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$5 \times 5 = 25$

(i) मर्मस्थान

(ii) वास्तुपुरुष का स्वरूप

(iii) राहु मुख पुच्छ विचार

(iv) भित्तिप्रमाण

(v) त्रिशालगृह

(vi) षड्वर्गपरिशोधन

× × × × ×